आदर्श प्रश्न पत्र (हल सहित)

विषय-हिन्दी

कक्षा -10+2

समय :- 3 घण्टे   पूर्णांक : -80

* परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
* प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।

विशेष निर्देश ÷

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। सुलेख व बर्तनी का विशेष ध्यान रखें।
2. प्रश्नों के उत्तर देते समय जो प्रश्न संख्या प्रश्न पत्र पर दर्शाई गई है, उत्तरपुस्तिका वहीं प्रश्न संख्या लिखना अनिवार्य है ।

प्र०1: प्रश्न 1 के 16 भाग है। निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का एक अंक है। प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प दिए गए हैं। जिनमें से सही विकल्प का चयन करें ।

(i) प्रकृति का सुकुमार कवि किसे कहा जाता है?

(क) जयशंकर प्रसाद।   (ख) सुमित्रानन्दन पंत

(ग) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला   (घ) हरिवंश राय बच्चन

उत्तर :- (ख) सुमित्रानन्दन पंत

(ii) "ढेले चुन लो" निबन्ध की शैली है -

(क) काव्यमयी   (ख) ललित

(ग) इतिवृतांत्मक .   (घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर :-(ग) इतिवृतांत्मक

(iii) कवि ने बनारस कों किसका शहर माना है।

(क) श्रद्धा   (ख) भक्ति

(ग) आस्था .   (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर :-(घ) उपरोक्त सभी

(iv) सिंगरौली क्षेत्र के जंगल में अधिकतर कौन से पेड़ होते थे?

(क) कत्था ,महुआ ,बॉस ,शीशम .   (ख) बबूल ,खजूर, बॉस

(ग) बेर, महुआ, शीशम   (घ) शीशम ,नीम, बबूल

उत्तर :- (क) कत्था महुआ बॉस शीशम

(v) देवदास कैसी कहानी है?

(क) उत्साहवर्धन ।   (ख) ईश्वरीय आस्था की।

(ग) प्रतियोगी परीक्षाओं की।　　(घ) प्रेम की ।

उत्तर :- (घ) प्रेम की

(vi) कौन सी कृति पर निर्मला वर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

(क) लाल टीन की छ्त ।　　(ख) वे दिन।

(ग) कब्वे और कालापानी।　　(घ) जलती झाड़ी।

उत्तर :-(ग) कब्वे और कालापानी ।

(vii) "दीठ" शब्द का अर्थ है ?

(क) हठ　　(ख) दृष्टि

(ग) जलन　　(घ) अभिमान

उत्तर :- .(ख) दृष्टि

(viii) सूरदास की झोपड़ी प्रेमचन्द के किस उपन्यास का अंश है?

(क) कर्मभूमि　　(ख) रंग़भूमि

(ग) गोदान　　(घ) गबन

उत्तर :- (ख) रंग़भूमि

(ix) कविता में बिम्ब क्या है? .

(क) कविता की संवेदना को प्रकट करना ।

(ख) अमूर्त कल्पनाओं कों मूर्त रूप प्रदान करना।

(ग) कल्पऩाओं द्वारा ऐन्द्रिय अनुभव ।

(घ) उपरोक्त सभी विकल्प ।

उत्तर :- (घ) उपरोक्त सभी विकल्प।

(x) परिपत्र किस श्रेणी का पत्र है ?

(क) सामाजिक　　(ख) कार्यालयी

(ग) व्यक्तित्व　　(घ) पारिवारिक

उत्तर :- (ख) कार्यालयी।

xi) समाचार लेखन के कितने ककार है?

(क) एक　　(ख) तीन .

(ग) छ्:　　(घ) आठ

उत्तर :- (ग) छ्:

(xii) जनसंचार के विविध आयाम कौन- कौन से हैं.

(क) टेलीफोन, इंटरनेट, फैक्स

(ख) संदेशवाहक ,डाकिया, कबूतर

(ग) रेडियो, समाचार पत्र ,सिनेमा

(घ) क और ग दोनों विकल्प।

उत्तर :-(घ) "क" और "ग" दोनों विकल्प।

(xiii) "एक अजीब सी लड़की है"। पंक्ति में अलंक़ार है -

(क) यमक (ख) उपमा

(ग) श्लेष (घ) रूपक

उत्तर :- (ख) उपमा

(xiv) विसनाथ को कौनसी बात देर में समझ में आई?

(क) बतख अंडे देने के समय पानी से जमीन पर आ जाती है।

(ख) बतख अंडे देने के समय पानी से आकर पेड पर बैठ जाती है

(ग) बतख अंडे देने के समय झुरमुट में छिप जाती हैं। .

(घ) उपरोक्त सभी - विकल्प ।

उत्तर :-बतख अंडे देने के समय पानी से जमीन पर आ जाती है।

(xv) रामचन्द्र शुक्ल का जन्म कब और कहा हुआ था?

(क) सन् 1884 में उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के अगौना गाँव।

(ख) सन् 1883 में पुरानी बस्ती जयपुर में।

(ग) सन् 1882में रावलपिंडी पाकिस्तान में।

(घ) इन में से कोई नहीं।

उत्तर :-(क) सन् 1884 में उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के अगौना गाँव।

(xvi) सही मिलान किजिए -

(क) जयशंकर प्रसाद i मैला आंचल ,जुलूस , अग्निखोर

(ख) मुंशी प्रेमचन्द. ii लोकायतन ,ग्राम्या ,बूढ़ा चांद

(ग) सुमित्रानन्द पंत iii आंसू ,झरना, आकाशदीप

(घ) फणीश्वरनाथ रेणु. iv रंगभूमि ,गबन, कर्मभूमि

विकल्प -1 iii,iv,ii,i

विकल्प -2 i,iii,ii,iv

विकल्प -3 I,ii,iii,iv

विकल्प -4 इनमें से कोई भी नहीं।

उत्तर -विकल्प -1 iii,iv,ii,i 16×1=16

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर अंत में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

. (1+1+1+1+1+1=6)

परिश्रम कल्पवृक्ष है। जीवन की कोई भी अभिलाषा परिश्रम रूपी कल्पवृक्ष से पूर्ण हो सकती है। परिश्रम जीवन का आधार है, उज्जवल भविष्य का जनक और सफलता की कुंजी है ।सृष्टि के आदि से अध्ययन कल तक विकसित सभ्यता और सर्वत्र उन्नति परिश्रम का परिणाम है।किसी देश राष्ट्र अथवा जाति को उसे देश के भौतिक संसाधन तब तक समृद्ध नहीं बना सकते जब तक की वहां के निवासी उन संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते। परिश्रम से रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं, हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारी प्रगति की द्रुत गति भी हमारे श्रम का ही फल है ।भाखड़ा नं गल का विशाल बांध हो या श्रीहरिकोटा के रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र हरित क्रांति की सफलता हो या कोवि ड-19 की रोकथाम के लिए टीका तैयार करना प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम तथा प्रमाण भी है।

(i) परिश्रम को किसके समान बताया गया है?

उतर - परिश्रम को कल्पवृक्ष के समान बताया गया है ,जिससे हर इच्छित वस्तु प्राप्त होती है।

(ii) जीवन की अभिलाषा कैसे पूर्ण होती है?

उत्तर - जीवन की अभिलाषा परिश्रम रूपी कल्पवृक्ष से पूर्ण होती है।

(iii) किसी देश अथवा राष्ट्र के भौतिक संसाधन समृद्ध कब होते हैं?

उत्तर - किसी भी देश या राष्ट्र भौतिक संसाधन तभी समृद्ध हो ते है ,जब उसके. नागरिक उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उचित दोहन करते हैं।

(iv) भारत के परिश्रम के प्रमाण क्या-क्या बताए गए हैं?

उत्तर - भाखड़ा नंगल बांध, रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र और कॉविड-19 की रोकथाम का. टीका तैयार करना इत्यादि भारत के परिश्रम के प्रमाण है।

(v) "संसाधनों के दोहन " से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - संसाधनों के दोहन से तात्पर्य किसी देश या राष्ट्र में प्राप्त सभी भौतिक संसाधनों का आवश्यकता अनुसार उचित प्रयोग करने से है।

(vi) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखें।

उत्तर- परिश्रम सफल जीवन का आधार।

प्रश्न 3.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

(1.5+1.5+1.5+1.5=6)

अरे !तुम तो इतने हुए अधीर
हार बैठे जीवन का दांव
जीते किसको मारकर वीर

तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक ही अवसाद
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(i) मनुष्य को किस तरह का जीवन जीना चाहिए?
उत्तर- मनुष्य को निराशा और हताशा को छोड़कर जीवन में आशा के प्रकाश की. खोज करनी चाहिए तथा आशापूर्णा जीवन जीना चाहिए।
(ii) कवि के अनुसार वीर पुरुष क्या हर बैठा है?
उत्तर- कवि के अनुसार वीर पुरुष अपने जीवन का दांव हार बैठा है।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में किसका आह्वान किया गया है और क्यों?
उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में निराश हताश मनुष्य को हिम्मत न हारने के लिए प्रेरित किया. गया है। उसे जीवन में आशा के स्रोत की खोज करनी चाहिए।
(iv) आशा का विलोम शब्द लिखिए।
उतर - निराशा ।
(v) वीर पुरुष जीवन का दांव कैसे जीत सकता है?
उतर - वीर पुरुष अपनी जान को जोखिम में डालकर जीवन का दांव जीत सकता है।
(vi) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखें।
उत्तर - नर हो न निराश करो मन को।

प्रश्न 4 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-- (1+2+1= 4)
(i) मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
(ii) जीवन में खेलों का महत्व।
(iii) हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल।
(iv) मेरे जीवन का उद्देश्य।
(v) महंगाई की समस्या।

उत्तर- i. "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"

जीवन में सफलता उसी को मिलती है जिसमें आत्मविश्वास भरपूर होता है। मन और मस्तिष्क की लगन ही मनुष्य को कार्य करने की प्रेरणा देती है। यदि मन में लगन नहीं हो तो व्यक्ति कोई भी कार्य ठीक ढंग से नहीं कर पाएगा। पूर्ण इच्छा- शक्ति से किया गया

कार्य असंभव कार्य को भी संभव बना देता है।
मन क्योंकि सभी इच्छाओं का केंद्र है, सभी दृश्य-अदृश्य इंद्रियों का नियामक और स्वामी है। अत: व्यवहार के स्तर पर उसकी हार के वास्तविक हार और जीत को सच्ची जीत माना जाता है। इसलिए मन पर नियंत्रण और मन की दृढ़ता की बात भी बार-बार कही जाती है। इसी कारण कहा गया है कि 'मन के हारे है मन के जीते जीत' मन ही तो सारी इन्द्रियों का संचालन करता है। मानव की सबसे बड़ी शक्ति मन ही तो है। इस शक्ति के कारण आज मनुष्य ने ब्रह्माण्ड को मटठी में कर लियाँ है। मनुष्य चंद्रमा और मंगल ग्रहों की यात्रा कर चुका है।
मन का दृढ़ विश्वास मनुष्य को संघर्षशील बनाता है और जीत की राह दिखाता है। वही मन की निराशा व्यक्ति को हताश और कमजोर बना देती है। निराश मन सफलता से दूर हो जाता है और उत्साह व आशा से भरा हुआ मन अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करता है।
मन से हारा हुआ व्यक्ति कोई भी कार्य या संघर्ष करने से पहले हार जाता है। वह अपनी सफलता का विश्वास नहीं समा पाता। मन में हारने का भय मनुष्य को भयभीत बना देता है। भयभीत आदमी हिचक-हिचक कर, रुक-रुक कर काम करता है। वह अपने आप को पूरी शक्ति से लक्ष्य में नहीं झौंक पाता। परिणाम यह होता है कि उसके हाथ ढीले पड़ जाते हैं, पैरों की गति मंद हो जाती है। अतः व्यक्ति अपेक्षित सफलता नहीं पा पाता। इसके विपरीत जो व्यक्ति आत्मविश्वास के साथ मैदान में उतरता है, उसके बिगड़े काम सँवर जाते हैं। उसे मार्ग की कोई मुसीबत, मुसीबत नहीं लगती। सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि आत्मविश्वासी व्यक्ति राह के कष्टों को कष्ट मानता ही नहीं। इस प्रकार उसकी विजय निश्चित हो जाती है। इसीलिए प्रभु से प्रार्थना करना की -
हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें।दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।

ii. **खेलों का जीवन में महत्त्व**

क्रीड़ा करना या खेलना हर प्राणी के स्वभाव में होता है। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों को भी खेलते हुए देखा है। सर्कस में जानवरों को बहुत से खेल खेलते देखा जा सकता है। बन्दरों, भालुओं तथा अन्य जंगली जानवरों को जंगलों में क्रीड़ारत देखा जा सकता है। शेक्सपीयर ने लिखा है कि ईश्वर शरारती बच्चे की तरह है जो खेल-खेल में लोगो मक्खियों की तरह मारता रहता है। हमारे यहां भी स्वीकार किया जाता है कि ईश्वर ने लीला के लिए सृष्टि का निर्माण किया। लीला अर्थात् क्रीड़ा या खेल, देवताओं और

साक्षात् ईश्वर को भी प्रिय है। मनुष्य जीवन अपने आप में एक नाटक जिसे हम विश्व के रंगमंच पर खेलते हैं। खेल को खेल की भावना से खेलना बहुत जरूरी है। प्राचीनकाल में माता-पिता अपने बच्चों को खेलने से रोकते थे। खेल को वे समय नष्ट करना समझते थे।' लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोंगे कूदोगे होगे खराब' की कहावत पर उन्हें पूरा विश्वास था। अब समय बदल गया है। के महत्त्व को स्वीकारा जा रहा है। शिक्षा का माध्मय खेल को बनाने पर आजकल बल दिया जा रहा है क्योंकि खेल में बच्चे आसानी से पढ़ना सीख लेते हैं। किंडर गार्टन और मोन्टेसरी पद्धतियों में शिक्षा खेल-खेल में ही दी है। खेलते समय बच्चा जितना तन्मय होता है उतना और किसी समय नहीं। खेल बच्चे की रुचि के अनुकूल होत खाना-पीना तक भूल जाता है। आज बहुत-से लोग खेलों को ही अपने जीवन के व्यवसाय के रूप में चुन रहे हैं। स भी खिलाड़ियों को प्रोत्साहन दे रही है और उन्हें नौकरियों में भी वरीयता दी जाती है।खेल हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। खेल खेलने से हमारे मन में प्रतियोगिता की भावना पैदा होन खिलाड़ी मिल-जुल कर खेलते हैं इसलिए उनमें पारस्परिक सहयोग की भी भावना पैदा होती है। खेल में त्याग भी रहती है। खिलाड़ी अपने लिए नहीं बल्कि अपनी टीम के लिए खेलता है, देश के लिए खेलता है।सृष्टि के आदिकाल से ही मनुष्य मनोरंजन के नए-से-नए साधन खोजता आया है। खेल भी मनोरंजन की व से ही जन्मे हैं। कुछ खेलों में शारीरिक क्षमता का अधिक प्रयोग होता है तो कुछ में मस्तिष्क का अधिक प्रयो है। सभी खेलों में थोड़ी-बहुत बुद्धि तो लगानी ही पड़ती है। खेलों से शरीर स्वस्थ और शक्तिशाली बन मांसपेशियां मजबूत होती हैं और शरीर में रक्त का संचार तीव्र हो जाता है। खेल सीखने के लिए मनुष्य को करना पड़ता है। किसी भी खेल में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए लगन और अथक प्रयास की आवश्यकत है। खिलाड़ी को अपने ऊपर नियन्त्रण रखना पड़ता है और उसे नियम से रहना होता है। जो खिलाड़ी संयम रह पाते और व्यसनों के शिकार हो जाते हैं उनका स्तर गिर जाता है। एक अच्छा खिलाड़ी बनने के लिए साम आवश्यकता है। खेल हमें लक्ष्य के प्रति जागरूक बनाते हैं।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खेलों से बढ़ कर और कोई र औषधि नहीं है। रोगी व्यक्ति न अपना हित कर सकता है और न समाज का। रोगी के लिए अपना जीवन ही ब जाता है। कमजोर तथा रुग्ण व्यक्ति के लिए जीवन एक लम्बी यातना बन कर रह जाता है।

खेलों से मनुष्य में ऐसी सामाजिक भावनाएं पैदा होती हैं जोकि समाज तथा व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण हैं विवेकानन्द जी ने अपने देश के युवकों को बलवान् बनने की प्रेरणा दी थी। गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबा को उन्होंने अधिक महत्त्व दिया था। कृष्ण की गीता के सन्देश को कार्यान्वित करने के लिए अर्जुन अथवा आवश्यकता रहती है। खेल

हमें अच्छा मनुष्य बनने में सहायता करते हैं। खिलाड़ी खेल में जय और पराजय में अपना सन्तुलन नहीं खोता और अपने विरोधी की प्रशंसा कर सकता है। विजय के क्षणों में अच्छा खिलाड़ी रहता है और पराजित खिलाड़ी की भावनाओं का सम्मान करता है। जब खेल, खेल की भावना से खेला जा वह खिलाड़ी के लिए भी और दर्शकों के लिए भी आनन्द का कारण बनता है।

आजकल खेल, खेल न रह कर व्यवसाय में बदल गए हैं। लाखों रुपयों के पुरस्कार विजेताओं के लिए हैं। खेल की अपेक्षा विजय अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है। प्रतिदिन अखबारों में आता है कि अमुक खिलाड़ी पदार्थों का प्रयोग किया, अमुक खिलाड़ी ने अवैध ढंग से प्रतियोगिता में भाग लिया और उसे दो या तीन वर्ष खेल में भाग लेने से रोक दिया गया। खेल के मैदान, युद्ध के अखाड़े बनते जा रहे हैं। खेल, खेल न रह क प्रतिष्ठा का प्रश्न बनते जा रहे हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि खेलों को खेल की भावना से खेला हर प्रकार की राजनीति से दूर रखा जाए।

iii. 'मेरा हिमाचल अथवा 'हिमाचल के पर्यटक स्थल'

प्रकृति का मनोरम क्रीड़ास्थल हिमाचल, हिमालय की गोद में बसा अत्यन्त प्राचीन क्षेत्र है। भू-शास्त्रियों के अनुसार 15,000 से 20,000 ई० पू० किन्नौर, लाहौल स्पिति और चौपाल आदि क्षेत्र पूरा मध्य सागर के भाग थे जिसके भरने से क्रमशः यह क्षेत्र बना। हिमाचल में पांच बड़ी पर्वत श्रृंखलाएं- शिवालिक, धौलाधार, पौरपंजाल, बृहद् हिमालय तथा असकर हैं। हिमाचल की धरती से भारत की पाँच बड़ी नदियाँ गुजरती हैं जो हैं- सतलुज, व्याम, रात्री, विनाव तया यमुना। हिमाचल की असंख्य झीलों में खजियार, रिवालसर, रेणुका, चन्द्रमोहन तथा मणिमहेश प्रसिद्ध हैं। हिमाचल का वर्तमान क्षेत्र 55,673 किलोमीटर है जो भारत के कुल क्षेत्र का 1.7% है। हिमाचल में गर्म पानी के अनेक स्रोत हैं जिनमें मणिकरण (कुल्लू), कसोल (कुल्लू-भुन्तर), वशिष्ट (कुल्लू) तथा जियोरी (किन्नौर) के स्रोत प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल अत्यधिक प्राचीन है। वैदिक काल में हिमाचल के किरात राजा शम्बर ने आर्य राजा दिवोदास के साथचालीस वर्ष तक युद्ध किया। ऋषि भारद्वाज, दिवोदास के प्रमुख सलाहकार थे। हिमाचल की दक्षिणी और पूर्वी ढलानोंपर बसे कोली, हाली और डोम लोग दक्षिण से आकर बसे। वैदिक काल में विदेशी आक्रान्ताओं की दूसरी लहर भोट और किरातों के रूप में आई। उत्तर-पश्चिम से हिमालय में प्रवेश करने वाले 'खुस' आर्य थे। उत्तर पूर्व से आकर'किरात' हिमाचल में बसे। हिमाचल में सदियों से अनेक

संस्कृतियों का मिलन होता रहा है। यह वह प्रदेश है जहाँ परहिडिम्बा का मन्दिर भी है और असंख्य देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों का विश्राम स्थल भी। विश्व का प्राचीनतम गणतन्त्र 'मलाणा' कुल्लू में है जहां आज भी प्राचीन शासन व्यवस्था देखी जा सकती है। हिमाचल का गठन 1948 में हुआ और इसका क्षेत्रफल 27,169 किलोमीटर था। 1954 में बिलासपुर राज्य इसमें मिल गया और 1966 में हिमाचल का पुनर्गठन हुआ और पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल को मिल गए। अब इसका क्षेत्रफल 55,673 किलोमीटर है। 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। 1991 की जनगणना के अनुसार हिमाचल की जनसंख्या 51,70,877 थी। 2001 में यह 60 लाख से अधिक थी।1991में हिमाचल के 63.54% लोग साक्षर थे।1991 आर्थिक दृष्टि से हिमाचल के साधन सीमित हैं। प्रदेश का अधिकांश भाग पहाड़ी है। जीवन कठिन है। जलवायु अनेक स्थानों पर कठोर है। यहाँ के परिश्रमी लोग अपने राज्य के आर्थिक विकास में लगे हैं। लघु उद्योगों और बागवानी के विकास से ही हिमाचल उन्नति करेगा। यहाँ के 63.2% लोग खेती-बाडी में लगे हैं। हिमाचल में जनजातियों की कुल जनसंख्या का 4.22% तथा अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 25-34% है। आई० आर० डी० पी० के अन्तर्गत आने वाले निर्धन परिवार के मुखिया की मृत्यु पर 5,000 रुपए का सरकारी अनुदान दिया जाता है। बूढ़े माँ बाप की देखभाल करना कानूनी दृष्टि से अनिवार्य बना दिया गया है। हिमाचल में व्यास तथा बाणगंगा के तट पर तथा कांगड़ा में देहरा तथा गुलेर में पुरातत्वविद् बो० वी० लाल ने 1955 में खोज कार्य कर यह सिद्ध किया कि इस क्षेत्र में मनुष्यों ने प्राथमिक मानवीय विकास के समय से हो रहना प्रारम्भ करदिया था। अनुमानतः 3000 ई० पू० से 1500 ई० पू० तक सिन्धु घाटी के लोगों ने गांगय क्षेत्र में बसे मुण्डा भारी कोलरियन जाति को हिमालय क्षेत्र की ओर धकेल दिया था। ये लोग जंगलों में बस गए और दस्यू कहलाए। उत्तर बैदिक साहित्य में इन्हें किन्नर, नाग और यक्ष नामों से पुकारा गया है। इतिहासकार मानते हैं कि हिमाचल के मूल निवासी कोन थे। पश्चिमी हिमालय में बसे कोली, हाली, डोम आदि हैं तथा शम्बर इनका सबसे शक्तिशाली शासक था। लाहौल स्थिति में बसे भोट और किरात मंगोलियन हैं। मध्य युग में अनेक राजपूत हिमालय में आकर बसे। मुस्लिम आक्राना भी कश्मीर की ओर से हिमाचल में आए। हिमाचल के छोटे-छोटे रजवाड़े प्रायः स्वतन्त्र रहे। कभी कभार मुगल, अंग्रेज और गोरखों तथा सिक्खों ने इसके कुछ भागों पर अधिकार अवश्य जमाया परन्तु वह ज्यादा दिन चल न सका।हिमाचल में अनेक बोलियां बोली जाती हैं जो कि पश्चिमी पहाड़ी में आती हैं। प्राचीनकाल में पहाड़ी भाषा सरी खाची, टांकरी में लिखी जाती थी, आजकल देवनागरी में लिखी जाती है। लाहुली, किन्नौरी, चम्वाली, कुल्लवी, कौगही, मंडयाली, बघाटी, सिरमौरी तथा महासुवी यहां की प्रमुख

बोलियां हैं।हिमाचल सामूहिक लोग-नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। किन्नौर में राक्षस क्यांग . वक्यांग, जातरूक्योग तथा छोहरा नृत्य होते हैं। लाहुल में शांद, चम्बा और झांझर, कुल्लू, सिरमौर, शिमला तथा चम्बा में नाटी नृत्य प्रसिद्ध हैं। झूरी, थी. गम तथा बुराह नृत्य सिरमौर में प्रचलित हैं। कुल्लू घाटी में खरेत, फिल्ली, फेटी, लूड़ी, वन्बड़ा आदि नृत्य प्रचलित हैं। हिमाचल के मेलों में वैशाखी (विशु), मिंजर (चम्बा), दशहरा (कुल्लू), लवी (रामपुर), रेणुका (नाहन), शिवरात्रि (मण्डी), नलवाड़ी (बिलासपुर) प्रसिद्ध हैं। भरमौरी यात्रा, छितराड़ी यात्रा, रोहडू यात्रा, रामपुरी यात्रा तथा फूल यात्रा भी प्रसिद्ध हैं। हिमाचल में शादी की अनेक विधियां प्रचलित है। परित्यक्ता के साथ विवाह 'झंजराड़ा' विधि से होता है। जलतीझाड़ी के चारों ओर चक्कर लगा कर होने वाली शादी 'बराड फुक', 'जराड फुक' या 'झिण्डीफुक' कहलाती है। झाकार, गाड्डुर या परैणा विधि की शादी में दूल्हा, दुल्हन के घर नहीं जाता। उसके सम्बन्धी दुल्हन को विदा करवा कर लाते हैं। हिमाचल के मध्य भाग में 'हार' विधि द्वारा भी विवाह होता है जिसमें दुल्हा, दुल्हन को भगा कर ले जाता है और शादी करता है।हिमाचल निश्चय ही अद्भुत लोक परम्पराओं, संस्कृतियों, जातियों, नाच गानों, कलाओं और त्योहार मेलों का प्रदेश है।

iv. " मेरे जीवन का उद्देश्य या प्रयोजन"

भूमिका : मनुष्य का महत्वकांक्षी होना एक स्वभाविक गुण होता है। हर व्यक्ति जीवन में कुछ विशेष प्राप्त करने की इच्छा रखता है। मनुष्य अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करता है। वह खुद को ऊपर उठाने के लिए योजनाएँ बनाता है। कल्पना तो सबके पास होती हैं लेकिन कल्पना को साकार करने की शक्ति केवल किसी-किसी के पास ही होती है। सपनों में तो सभी घूमते हैं।

सभी लोग महत्वकांक्षाओं के मोती प्राप्त करना चाहते हैं। मनुष्य कभी भी बिना उद्देश्य के कोई काम नहीं करता है मनुष्य का हर कार्य सोद्देश्य पूर्ण होता है। एक मनुष्य भी बिना उद्देश्य के कोई काम नहीं करता है। कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को सामने रखकर ही कार्य करता है। हमारा जीवन एक यात्रा की तरह होता है।

अगर यात्री को पता होता है कि उसे कहाँ पर जाना है तो वह अपने लक्ष्य की तरफ बढना शुरू कर देता है लेकिन जब यात्री को अपने लक्ष्य का ही पता नहीं होता है तो उसकी यात्रा निरर्थक हो जाती है। उसी तरह यदि एक विद्यार्थी को पता होता है कि उसे क्या बनना है तो वह उसी दिशा में प्रयत्न करना शुरू कर देता है और अपने लक्ष्य में सफल भी हो जाता है। जब एक विद्यार्थी का कोई उद्देश्य ही नहीं होता है तो उसका

जीवन उसको कहीं पर भी नहीं ले जाता है।

बाल्यावस्था की समस्या : जब बच्चा छोटा होता है तो वह विद्यालय में प्रवेश करता है। उस समय में बच्चों के सामने अनेक लक्ष्य होते हैं। वह जैसे-जैसे लोगों के संपर्क में आता है वैसे-वैसे उस पर प्रभाव पड़ता है। कभी तो वह सोचने लगता है कि वह डॉक्टर बनेगा और कभी वह सोचने लगता है कि वह अध्यापक बनेगा और कभी इंजीनियर बनेगा।
अलग-अलग लोगों के लक्ष्य भी अलग-अलग होते हैं। कभी वह डॉक्टर बनकर रोगियों की सेवा करना चाहता है, कभी इंजीनियर बनकर इमारतें बनाना चाहता है, कभी नेता बनकर देश की सेवा करना चाहता है, कभी सैनिक बनकर देश की रक्षा करना चाहता है। माँ-बाप भी यह कल्पना करते हैं कि वे अपने बच्चे को यह बनायेंगे, वह बनायेंगे लेकिन वास्तव में निर्णय तो बच्चों को खुद ही लेना पड़ता है। माँ-बाप को बच्चों पर अपनी मर्जी नहीं थोपनी चाहिए। विद्यार्थीकाल मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह मानव जीवन की आधारशिला के बराबर होता है।
यदि विद्यार्थी इस काल में अपने जीवन के लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं तो वे जीवन को सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण बना लेता है और अपने देश और समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। सभी लोगों की इच्छाएं अलग-अलग होती हैं लेकिन कुछ ही लोगों की इच्छाएं साकार हो पाती हैं।

डॉक्टर बनने का उद्देश्य : मैं अक्सर अपने दोस्तों को बात करते हुए सुनता हूँ की वे क्या बनना चाहते हैं लेकिन मैंने तो पहले से ही अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर रखा है। मेरा जीवन में एक ही लक्ष्य है कि मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनूंगा। मैं डॉक्टर बनकर देश और समाज की रोगों से रक्षा करूंगा।
कुछ विद्यार्थी डॉक्टर इसलिए बनना चाहते हैं जिससे वे अधिक-से-अधिक धन कमा सकें लेकिन मेरा उद्देश्य यह नहीं है। मैं डॉक्टर बनकर गरीबों और पीड़ितों की सेवा करना चाहता हूँ। कुछ लोग अपने उद्देश्य को पाकर भी गलत रास्ते पर चल देते हैं वे अपने कर्तव्य को अच्छी तरह नहीं निभाते हैं।

मैं अपने लक्ष्य पर पहुंचने के बाद अपने कर्तव्य से नहीं भटकूँगा। मैं ऐसा चिकित्सा ज्ञान प्राप्त करना चाहता जिसे लोग पैसा के अभाव की वजह से प्राप्त नहीं कर पाते हैं। मैं डॉक्टर इसलिए बनना चाहता हूँ जिससे मैं गरीब लोगों की रोगों से रक्षा कर सकूं।

मैं उन्हें स्वस्थ रहने के लिए अनेक प्रकार के तरीके बताऊंगा जैसे- वे किस प्रकार जीवन-यापन करें, स्वास्थ्य और संतुलित भोजन के महत्व को समझें, किस प्रकार रोगों से खुद की रक्षा करें इन सब में मैं अपना पूरा योगदान दूंगा। मैं डॉक्टर बनकर अपने देश और समाज की सेवा करना चाहता हूँ।

शिक्षकों एवं डॉक्टर का महत्व : प्राचीनकाल के धार्मिक ग्रंथ भी घोषणा करते हैं कि दो वर्ग के मनुष्यों का समाज पर बहुत ज्यादा उपकार है। पहला वर्ग शिक्षकों का है जो लोगों के अंदर से अज्ञान को निकालकर ज्ञान का दीपक जलाकर उनके जीवन को सार्थक कर देते हैं।दूसरा वर्ग डॉक्टर या चिकित्सक का होता है जो रोगी के रोगों को दूर करके उसे नया जीवन देता है। शिक्षा देना और रोगियों का इलाज करना दोनों ही पवित्र काम होते हैं और मैंने अपने जीवन के लक्ष्य के लिए इनमें से एक पवित्र लक्ष्य को चुन लिया है।हमारे देश में जितने भी लोग डॉक्टरी की परीक्षा में पास होते हैं वे नगरों या शहरों में अपने अलग क्लीनिक खोल लेते हैं और धन जमा करना शुरू कर देते हैं और विदेशों की तरफ भागते है। ऐसे डॉक्टर कभी भी समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं समझते हैं।वे अपना लक्ष्य सिर्फ धन कमाना मानते हैं। आज के समय में नगरों में ऐसे असंख्य नर्सिंग होम खुल चुके हैं। यहाँ पर जो डॉक्टर काम करते हैं वे मरीजों को गुमराह कर रहे हैं। यह अपने देश और देश में रहने वाले निवासियों के साथ विश्वासघात है।

ग्रामीणों के उपचार की आवश्यकता : मैं दूसरे लोगों की तरह नगर में क्लीनिक न खोलकर नगर से दूर गाँव में एक छोटा सा अस्पताल स्थापित करूं जिससे गाँव के लोगों को रोगों से बचने और रोग से मुक्त होने की सुविधा मिल सके। मैं रोगियों से पैसे लूटने की जगह उनसे केवल उतने ही पैसे लूँगा जिससे अस्पताल सुचारू रूप से चल सके। जो लोग गरीब और अभावग्रस्त होंगे उनका इलाज मैं मुफ्त में करूंगा। मैं भी एक गाँव का रहने वाला हूँ। मैंने कई बार गाँव के लोगों को दवा और इलाज के अभाव की वजह से मरते हुए देखा है और देख रहा हूँ। मैं डॉक्टर बनकर उन लोगों की सेवा करना चाहता हूँ जो न ही तो बड़े डॉक्टर को मोटी फीस दे सकते हैं और न ही मरीज को बड़े नगरों में ले जा सकते हैं।ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की अधिक-से-अधिक जरूरत है। हम अक्सर रेडियो, समाचार पत्र और अखबारों में पढ़ते हैं कि हर साल हजारों लोग कुपोषण का शिकार हो रहे है और उन्हें ठीक इलाज न मिलने की वजह से उनकी मौत हो जाती है इस बात को पढकर बहुत दुःख होता है।उद्देश्य पूर्ति के लिए प्रयत्न : मैं यह बात अच्छी तरह से जानता हूँ कि एक सफल डॉक्टर बनना आसान नहीं है इसके लिए बहुत कठिन

परिश्रम करना पड़ता है। डॉक्टर के ह्रदय में मरीजों के प्रति दया, करुणा, और सहानुभूति की भावना होना बहुत ही जरूरी होता है। मैंने अपने इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए अभी से प्रयास करने शुरू कर दिए हैं।मेरे माता-पिता का आशिर्वाद सदैव मेरे साथ है। उनका भी सपना है कि मैं बड़ा होकर डॉक्टर बनूँ। मैं डॉक्टर बनकर सही अर्थों में उन लोगों को पाठ पढ़ाना चाहता हूँ जो लोगों से पैसे कमाने के लिए डॉक्टर बनते हैं। मैं किसी ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे नर्सिंग होम की स्थापना करना चाहता हूँ जिसमें गरीब और अभावग्रस्त लोगों का उचित फीस पर इलाज कर सकूं।आज के समय में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की बहुत जरूरत है। यह काम भारत सरकार कर रही है लेकिन उसकी अपनी सीमाएं हैं। मैं अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए बहुत कठिन परिश्रम करूंगा। मैं जब तक डॉक्टर नहीं बन जाता तब तक चैन से नहीं बैठूँगा।

उपसंहार : मेरी यह इच्छा है कि मैं अपने लक्ष्य को पूरा करूं। मैं इस काम को पूरा करने के लिए स्थानीय लोगों के साथ-साथ समाज-सेवा संस्थाओं का भी सहयोग लूँगा। मैं कोशिश करूंगा कि गाँव में स्थित मेरा नर्सिंग होम गाँव के लोगों की जरूरतों को पूरा कर सकें।मुझे पता है कि यह काम इतना आसान नहीं है लेकिन मेरे दृढ निश्चय और संकल्प से सभी काम संभव हो सकते हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरी लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करें। मुझे विश्वास है कि मेरे डॉक्टर बनने के लक्ष्य में गुरुजन, सहपाठी और मेरे माता-पिता मेरा साथ जरुर देंगे। मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठिन-से-कठिन परिश्रम करूंगा।

v. "महंगाई की समस्या "

भूमिका - रोजमर्रा के जीवन मे इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं और उत्पादों की कीमत में वृद्धि होने को महंगाई कहते हैं। महंगाई के कारण देश की अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते हैं। महंगाई आम जनता की रोजी-रोटी को भी प्रभावित करती है।

मंहगाई की समस्या- बढती हुई महंगाई भारत की एक बहुत ही गंभीर समस्या है। सरकार एक तरफ महंगाई को कम करने की बात करती है वही दूसरी तरफ कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। आज देश में महंगाई मानो आसमान छू रही हो। आज सभी लोग महंगाई को कम करने की मांग कर रही है। परंतु महंगाई देश में साल-दर-साल ऊपर चली जा रही है।

भारत में महंगाई के कारण- महंगाई की समस्या हमारे ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की एक बहुत ही गंभीर समस्या बन गयी है जो लगातार बढती जा रही है। भारत में महंगाई के बढने के अनेक कारण हैं जैसे मांग की अपेक्षा उत्पादों की कम आपूर्ति होना, वस्तुओं और उत्पादों की कालाबाजारी करना, वस्तुओं और उत्पादों की कीमत बढ़ा देना आदि। भारत में महंगाई के बढने का एक कारण जनसंख्या का बढ़ना भी है। सूखा पड़ना, बाढ़ आना या उपज में कमी होने से महंगाई बढ़ती है। देश में मंहगाई बढ़ने का एक कारण वितरण की ख़राब व्यवस्था है। कई बार अच्छा उत्पादन होने के बाद भी वस्तुएँ। नहीं मिलती हैं अगर मिलती भी हैं तो वे महंगी होती हैं। इसकी दोषी हमारी वितरण प्रणाली होती है। ऐसे में कड़ी कारवाई करने की जरुरत है।

महंगाई को रोकने का उपाय- देश के बुरे व्यापारी, अफसरशाही, नेता, इस महंगाई को बढ़ाने के लिए अधिक जिम्मेदार होते हैं। अगर सही नियम-कानून का पालन किया जाए तो भारत में महंगाई को रोका जा सकता है। सबसे पहले सरकार को देश में उत्पादों की संख्या बढ़ानी होगी। हमारे देश के किसानों को सिंचाई के लिए आधुनिक साधन आज भी प्राप्त नहीं हुए हैं। सरकार को बड़े-बड़े नगरों के विकास से ज्यादा गांवों के विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिए। पूरे देश के लिए एक तरह की सिंचाई व्यवस्था का आयोजन होना चाहिए। किसानों को उत्पाद बढ़ाने में सरकार को अपना योगदान देना होगा जिससे किसान अच्छी तरह अपने फसल की आपूर्ति बढाए। दूसरी ओर सरकार को कालाबाजारी, जमाखोरों को रोकने के लिए कड़ी कानून बनाने चाहिए।

उपसंहार- महंगाई को रोकने के लिए समय-समय पर हड़तालें और आंदोलन चलाये गये हैं लेकिन फिर भी महंगाई कम नहीं हुए है। महंगाई की वजह से गरीब लोग मुश्किल के साथ गुजारा कर रहे हैं। महंगाई को कम करने के लिए उपयोगी राष्ट्र नीति की जरूरत है।

प्र05: आपका चयन आई०टी०आई जिला मण्डी के लिए हुआ है, जिसमें दाखिला लेने के स्कूल के • सत्यापन की नितान्त आवश्यकता है। इस संन्दर्भ में विद्यालय के प्रधानाचार्य का सदाचार प्रमाण-पत्र लेने हेतु प्रार्थना पत्र लिखो, जिसमें आपकी अपलब्धियों एवं रूचियों का विशेष उल्लेख हो । (1+2+1=4)

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय जी,

रा०उच्च माध्यमिक पाठशाला
क ०ख० ग० ।
विषय:-सदाचार प्रमाण पत्र हेतु प्रार्थना पत्र।
मान्यवर जी,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आप के विद्यालय का 2022-23 स त्र 12वीं कक्षा का छात्र रहा हूं। मेरा कक्षा क्रमांक29 था और 12वीं की परीक्षा का क्रमांक 2460088 मैंने मार्च 2023 में 12वीं की परीक्षा 356/500 अंक लेकर उत्तीर्ण की थी।
मैं विद्यालय की कबड्डी टीम का कप्तान रहा और वाद विवाद प्रतियोगिताओं और नाट्य प्रस्तुतियों में भी सहभागी रहा एन०सी०सी० का बी ० सर्टिफिकेट भी मैंने प्राप्त किया है। अब मेरा चयन औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान जिला मंडी में हुआ है जिसमें दाखिल होने के लिए स्कूल के सत्यापन की नितांत आवश्यकता है। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे सदाचार प्रमाण पत्र प्रमाण पत्र देने की कृपा करें, जिसमें मेरी विद्यालय के प्रति रही उपलब्धियों एवं रुचियों का विशेष उल्लेख किया हो, ताकि मैं समयानुसार आई टी आई जिला मण्डी में प्रवेश ले सकूं।
इस कृतार्थ के लिए मैं सदा आपका आभारी रहूंगा।
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
नाम --------

अथवा

अपने मित्र या सखी को जीवन में योग की महता पर प्रकाश डालते हुए पत्र लिखें ।

परीक्षा भवन,
क० ख० केन्द्र,
अ० ब० शहर।
14.05.20....
मित्रवर लक्ष्मी,
कल तुम्हारा पन्द्रहवाँ जन्मदिन है। निश्चय ही कल तुम्हारे घर पर सभी मित्र तुम्हें बधाई देने पहुंचेंगे और खुशियों मनाएंगे। अपने जन्म दिन पर मेरी ओर से शतश: बधाई स्वीकार करें। मैं भी तुम्हारी खुशी में शामिल होना चाहताया परन्तु कल परीक्षा है इसलिए आने में अक्षम हूँ। कुरीयर से छोटी सी भेट भेज रहा हूँ, स्वीकार करें। तुमने अपनाजन्मदिन कैसे मनाया इसका विवरण अवश्य लिखकर भेजें।

शेष कुशल है। पत्रोत्तर शीघ्र दें।

आपका स्नेही, आनन्द।

पता
श्री लक्ष्मी शर्मा 1760, 39A, चण्डीगढ़। पिन कोड नं०..........

प्र06: निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए ? (3×2=6)

(i)विभिन्न जनसंचार माध्यमों में इंटरनेट की क्या भूमिका है ?

उत्तर-इंटरनेट पत्रकारिता को अनेक नामों से पुकारा जाता है जैसे ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता आदि। जिन लोगों को इंटरनेट (संजाल या विश्वजाल) सुविधा प्राप्त है उन्हें साधारण अखबार के समाचार पुराने या बासी लगने लगते हैं। वे हर घण्टे दो घण्टे में नवीनतम जानकारियां प्राप्त करना चाहते हैं।भारत में इंटरनेट का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। प्रतिवर्ष 50 से 55% तक से अधिक लोग इंटरनेट सुविधा अपना रहे हैं। इंटरनेट पर हम कम खर्च करके, अधिकतम समाचार जान सकते हैं। इंटरनेट एक तरह का औजार या उपकरण है जिसके द्वारा मनोरंजन, सूचना, ज्ञानवर्द्धन तथा व्यक्तिगत और सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान की सुविधा प्राप्त होती है। इंटरनेट के साथ समस्या यह है कि बहुत-सी अश्लील और हानिकारक साइट्स तक अपरिपक्व दिमागों की पहुंच हो जाती है।आज अखबारों के सम्प्रेषण के लिए भी इंटरनेट का प्रयोग होने लगा है। रिपोर्टर अपनी खबर को ई-मेल के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजता है। वह इसका प्रयोग समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण के ।लिए भी करता है। कोई भी जानकारी, विश्व के किसी भी कोने या साहित्य की किसी भी विधा के विषय में क्षणभर में प्राप्त की जा सकती है। पुराने समय में टेलीप्रिन्टर से एक मिनट में मात्र 80 शब्द ही सम्प्रेषित किए जा सकते थे। आज एक सेकेंड में 56 किलोबाइट अर्थात् 70 हप्तार शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते हैं।इस प्रकार हम देखते हैं कि इंटरनेट का प्रयोग रिपोर्टर खबरों के सम्प्रेषण के लिए भी करता है और खबरें संग्रहित करने तथा उन्हें सत्यापित करने का काम भी इसके माध्यम से करता है। इंटरनेट से रिसर्च और शोध का काम आसान हो गया है। इंटरनेट पर किसी भी विषय की पृष्ठभूमि की प्रामाणिक जानकारी

मिल सकती है।

(ii) कविता के महत्वपूर्ण घटक कौन-कौन से है? वर्णन करें।

उत्तर-उत्तर-कविता, कवि के मन में एकाएक जन्म लेती है। अच्छी कविता के लिए निम्नलिखित घटक महत्त्वपूर्ण है-

(1) भाषा पर पूर्ण अधिकार- कवि के लिए कविता करने का माध्यम भाषा है। अच्छा कारीगर अपने औजारों का विशेष ध्यान रखता है। कवि को केवल शब्दों का ही पारखी नहीं होना चाहिए उसे कविता की आत्मा की भी महो पहचान होनी चाहिए।

(2) लयात्मकता एवं संगीतात्मकता- कविता का आधार लय है। यह लय छंद से भी निर्मित होती है और अर्थसे भी। अच्छा कवि शब्दों में लय और संगीत की खोज करता है।

(3) परिवेश सम्मृक्ति - अच्छी कविता अपने समय को अभिव्यक्त करती है। कवि जिस परिवेश में जीता है उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में चित्रण अवश्य करता है। तुलसीदास ने कवितावली और रामचरितमानस में कलियुग का विस्तृत विवेचन किया है। यह कलियुग वास्तव में मुगलकाल ही है। अपने समय की सारी विकृतियों को कवि ने कलियुग में प्रक्षेपित कर दिया है।

(4) रागात्मकता - रागात्मक संबंध ही कविता का आधार है। कवि अपने परिवेश से रागात्मक संबंध स्थापित करता

(5) शब्द-संयम- कवि, शब्दों का अपव्यय नहीं करता। कविता का हर शब्द लाक्षणिक ढंग से अनेक अर्थ छवियों को जन्म देता है।

(iii) समाचार पत्र समाज में क्या दायित्व निभाते है ?

उत्तर-समाचार पत्र में सामाजिक मुद्दों, मानवता, संस्कृतियों, परंपराओं, जीवन जीने की कला, ध्यान, योग आदि पर अच्छे लेख भी होते हैं। इसमें आम जनता के विचारों के बारे में जानकारी होती है और विभिन्न सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को हल करने में मदद मिलती है।अख़बार लोगों को हर छोटी-बड़ी जानकारी देते हैं। इसके अलावा, यह हमें जागरूक नागरिक बनने में मदद करता है। जब भी देश के नियमों और विनियमों में कोई बदलाव होता है, तो समाचार पत्र हमें उनके बारे में जागरूक करते हैं। इसके अलावा, वे छात्रों के लिए बहुत जानकारीपूर्ण हैं।

(iv) फीचर क्या है ?

उत्तर-अखवारों और समाचार पत्रों में रोचक सामग्री फीचर अथवा लेखों के रूप में दी

जाती है जिनका आकार 200-300 शब्दों से लेकर 2000-2500 हजार शब्दों तक का हो सकता है। आकार विषय की महत्ता और पाठकों को रुचि तय करती है। समाचार और फीचर में मौलिक अन्तर यह है कि फीचर मनोरंजन और शिक्षण के लिए लिखा जाता है. इस पर तात्कालिकता और शब्द सीमा का दबाव वैसा नहीं रहता जैसा समाचारों पर रहता है। समाचार लेखन में अस्तुनिष्ठ शैली रहती है और अपना दृष्टिकोण देने का स्थान नहीं होता। फीचर लेखन आत्मनिष्ट होता है और उसमें अपना मत प्रकट किया जाता है। समाचार में उल्टा पिरामिड शैली प्रयुक्त होती है जबकि फीचर में कथात्मक शैली का प्रयोग होता है। समाचार को भाषा सरल, अभिधात्मक होती है जबकि फीचर की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मर को छूने वाली होती है। भले ही वह अधिक अलंकारिक न हो।

(v) पत्रकारिता के कौन-कौन से आयाम है ?

उत्तर- पत्रकारिता का इतिहास बेशक पुराना है, परंतु 21 वीं शताब्दी में इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया. जिसमें आवश्यक विविधतायें भी समाहित हो गई। उल्लेखनीय है कि आज का जीवन विविधताओं से भरा है और नित्य नूतन साधों की प्रचुरता के कारण पत्रकारिता बहुआयामी बन चुकी है। आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृति के अनुरूप अपने लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं, क्योंकि आज का युग स्पेशलाइजेशन का युग है जिसमें क्षेत्र विशेष का अलग-अलग महत्व है। अतः पत्रकारिता के विविध आयामों की आवश्यकता महसूस किया जाना स्वाभाविक है। पत्रकारिता के निम्नांकित आयामों का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. व्याख्यात्मक पत्रकारिता
2. विकास पत्रकारिता
3. आर्थिक पत्रकारिता
4. खेल पत्रकारिता
5. ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता
6. संसदीय पत्रकारिता
7. विधि पत्रकारिता
8. विज्ञान पत्रकारिता
9. शैक्षणिक पत्रकारिता
10. सांस्कृतिक पत्रकारिता
11. साहित्यिक पत्रकारिता
12. अनुसंधानात्मक पत्रकारिता

13. संदर्भ पत्रकारिता
14. वृत्तांत पत्रकारिता
15. रेडियो पत्रकारिता
16. टेलीविजन पत्रकारिता
17. फोटो पत्रकारिता
18. सर्वोदय पत्रकारिता
19. पीत पत्रकारिता
20. एडवोकेसी पत्रकारिता
21. साहित्यिक पत्रकारिता
22. राजनीतिक पत्रकारिता
23. खोजी पत्रकारिता
24. बाल पत्रकारिता
25. पेज 3 पत्रकारिता आदि

(3x2=6)

प्र07: निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:- (1+2+1=4)

कभी सई-साँझ
बिना किसी सूचना के
घुस जाओ इस शहर में
कभी आरती के आलोक में
इसे अचानक देखो
अद्भुत है इसकी बनावट
यह आधा जल में है
आधा मंत्र में
आधा फूल में है
आधा शव में
आधा नींद में है
आधा ध्यान से देखो
तो यह आधा है
और आधा नहीं है।

उत्तर---

सप्रसंग व्याख्या - प्रस्तुत पद्यांश केदारनाथ सिंह विरचित कविता 'बनारस' से लिया गया है। बनारस की शाम बहुत आकर्षक होती है और इसके अनेक रंग हैं। कवि बनारस की शाम का आनन्द लेने के लिए पाठकों को आमन्त्रित करता हुआ कहता है कि-
कभी संध्या के समय यदि आप इस शहर में चुपचाप चले आएं तो यहां की सांझ को अपने असली रंग में देख सकते हो। तुम पाओगे कि संध्या के समय रोशनी में नहाए अनेक मन्दिरों में एक साथ आरती की धुन गूंज रही है। इस समय यह शहर अजीब सा लगता है। आधा शहर मानो जल में होता है अर्थात् लोग गंगा के घाटों पर पूजा- अर्चना कर रहे होते हैं। लोग मंत्रोच्चार करते हुए, अर्घ्य में फूल चढ़ाते हुए हर कहीं देखे जा सकते हैं। ऐसा लगता है कि आधा शहर फूलों से ढक गया है और आधा गंगा के जल में डूबा है। आधा शहर शव को तरह निजाँव सा पड़ा है और आधा नींद की खुमारी में झूम रहा है। आधे शहर में शंख ध्वनि गूंजती है और यदि ध्यान से देखो आधा शहर है और आधा नहीं है। कहने का भाव यह है कि आधा शहर अपनी रोजी-रोटी कमाने और दिनचर्या में लगा रहता है तो आधे शहर को मानो परलोक सुधारने के अलावा कोई काम नहीं है।

विशेष - (1) 'सई सांझ' में अनुप्रास अलंकार है। देशज प्रयोग है।
(2) शाम के समय बनारस का मार्मिक चित्र अंकित है।
(3) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है।
(4) कविता मुक्त छन्द में है।

अथवा

राघौ। एक बार फिरि आयी ।
ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहीं सिंधावी ।।
जे पय प्याइ पोखि कर पंकज वार वार चुचुकारे ।
क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले ति अब निपट बिसरे ।।
भरत सौगुनी सार करत है अति प्रिय जानि तिहारे ।
तदपि दिनहीं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे ।।
सुनहु पथिक ! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो ।
तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बडो अंदेसो ।।

उत्तर---

सप्रसंग व्याख्या -प्रस्तुत पद रामभक्त कवि तुलसीदास विरचित 'गीतावली' से उद्धृत है। गीतावली में राम से सम्बन्धित गीतों का संग्रह है। प्रस्तुत पद में राम के विरह में माता

कौशल्या की मनोदशा का चित्रण किया गया है। कौशल्या, राम से वापिस लौट आने का आग्रह करती हुई उन्हें सन्देश भिजवाती है कि उनके विरह में उनके पालतू घोड़े अत्यन्त दुर्बल हो गए हैं। कौशल्या कहती हैं कि- व्याख्या- हे राम ! एक बार तो लॉट आओ। एक बार अपने प्रिय घोड़ों का हाल देख जाओ फिर भले ही वन को चले जाना। जिन घोड़ों को तुम बार-बार पुचकारते थे, दूध-पिला-पिला कर पुष्ट करते थे, अपने हाथों से पालते थे, खाना देते थे वे अब कैसे जीएं जब कि तुमने उन्हें बिल्कुल ही भुला दिया है। भरत जी उनकी देखभाल में कोई कमी नहीं करते। वे तो इन्हें तुम्हारा प्यारा मानकर सौ गुना अधिक सम्भालते हैं परन्तु फिर भी ये दिन प्रतिदिन कमजोर होते जाते हैं। इनकी हालत तो उन कमलों की सी हो गई है जिन्हें पाले ने मार डाला हो। ये कमल तो ठण्ड से सड़ गए हैं। कौशल्या जी एक मुसाफिर को वनों की ओर जाते देखती हैं तो उससे कहती हैं कि "हे मुसाफिर! यदि राम तुम्हें वन में मिले तो उन्हें मेरा सन्देश देना। उनसे कहना कि माता कौशल्या को राम के प्रिय घोड़ों की जान की चिन्ता सर्वाधिक है।"

विशेष - (1) राम के वनगमन पर अयोध्या के नर-नारी ही नहीं, पशु-पक्षी भी दुःखी हैं। सूरदास के पदों की छाया इस पद पर है। कृष्ण के विरह में गायों तथा जीव-जन्तुओं सहित पेड़-पौधों का दुखी होना सूरदास ने अनेक पदों में चित्रित किया है।
(2) अवधी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
(3) राग सोरठ पर आधारित गेय पद है।
(4) करुण रस से पूर्ण पद है।
(5) स्वर मैत्री का प्रयोग गेयता पैदा करने के लिए हुआ है।
(6) अनुप्रास, उपमा, रूपक और पुनरुक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
(7) 'मनहुँ कमल हिममारे' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
(8) राम के प्रिय घोड़ों के बहाने से कौशल्या की विरह भावना व्यक्त हुई है।

प्र०8: निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- (3x2=6)

(i) "उड़ते खग" और "बरसाती ओंखो के बादल" से क्या विशेष अर्थ व्यंजित हो है ?
उत्तर - 'उड़ते खग' जिस दिशा में जाते हैं, वह देश भारतवर्ष है। यहाँ पक्षियों तक को आश्रय मिलता है। इससे विशेष अर्थ यह व्यंजित होता है कि भारत सभी शरणार्थियों की आश्रयस्थली है। यहाँ सभी को आश्रय मिल जाता है। यहाँ आकर लोगों को शांति और संतोष का अनुभव होता है। अनजान को सहारा देना हमारे देश की विशेषता है।
'बरसाती आँखों के बादल' से यह विशेष अर्थ ध्वनित होता है कि भारतवर्ष के लोग

दया, करुणा और सहानुभूति के भावों से ओत-प्रोत हैं। यहाँ के लोग दूसरे के दुखों को देखकर द्रवित हो उठते हैं और उनकी आँखों से आँसू बरसने लगते हैं।.

(ii) कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है ?
उत्तर- पंचवटी को भगवान शिव का रूप माना गया है। पंचवटी के दर्शनों से निम्नलिखित प्रभाव पड़ता है-
(क) दुखियों के दुःख की चादर फट जाती है और वे सुखी हो जाते हैं।
(ख) कपटी व्यक्तियों का कपट भाव समाप्त हो जाता है।
(ग)पंचवटी के दर्शन कर मृत्यु का भय नहीं रहता।
(घ) लोगों के पाप नष्ट हो जाते हैं।
(ङ) पंत्रावटी के दर्शन करने मात्र से मुक्ति मिल जाती है।

(iii) वृक्षों से पतियाँ तथा वनों से ढाखें किस माह में गिरतें है? इससे विरहणी का क्या सम्बन्ध है ?
उत्तर- फागुन मास में वृक्षों की पत्तियाँ निरन्तर झड़ती हैं जिन्हें देख विरहणी और अधिक उदास हो जाती है।उसकी हालत भी तो विरह के ताप में सूखे पत्ते की सी होती है। माघ के महीने में विरहणी की आशाएं भी पत्तों की तरह झड़कर गिरने लगती हैं। पलाश के फूल भी झड़ जाते हैं।

(iv) कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?
उत्तर-कवि ने आशा को बावली, या पगली कहा है क्योंकि आशा तर्क अथवा बुद्धि से काम नहीं लेती। आशा पगली है क्योंकि वह बार-बार असफल होकर भी हार नहीं मानती, समाप्त नहीं होती। आशा मरती नहीं, हार नहीं मानना जानती इसलिए बावली है।

(v) में जानऊँ निज नाथ सुभाऊँ।" में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है ?
उत्तर -इस कथन के माध्यम से राम के स्वभाव में सबके प्रति प्रेम, दया, ममता, करुणा आदि भावों की ओर संकेत किया गया है। राम का स्वभाव ऐसा है कि वे तो कभी अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते हैं। अपने छोटे भाइयों के प्रति उन्हें विशेष प्रेम है। वे स्वयं हारकर अपने भाइयों को जिता देते हैं। वे कभी भी किसी के मन को नहीं दुखाते और न ही किसी के मन के प्रतिकूल कार्य करते हैं। वे खेल में भी कभी अप्रसन्न नहींहोते।

(vi) कार्नेलिया के गीत कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है ?

उत्तर :'कार्नेलिया का गीत' कविता में प्रसाद जी ने भारत की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर संकेत किया है-

भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है।प्रसाद जी ने इसे मधुमय कहा है।

भारत की भूमि पर सूर्य की पहली किरणें पड़ती हैं।

इस देश में अनजान व्यक्तियों को भी आश्रय प्राप्त हो जाता है।

भारतवर्ष के लोगों के हुदय दया, करुणा एवं सहानुभूति की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं।भारतवर्ष में सभी के सुखों की कामना की जाती है।

भारतीय संस्कृति महान एवं गौरवशाली है।

प्र० 9 : निम्नलिखित में से किसी एक कवि की काव्यगत विशेषताएं लिखिए :- (3)

(i) जयशंकर प्रसाद

उत्तर-महान लेखक और कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में हुआ तथा मृत्यु – सन 1937 ई. में हुई। बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। बचपन में ही पिता के निधन से पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोझ इनके कधों पर आ गया था। मात्र आठवीं तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, हिंदी, उर्दू व अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का विशद ज्ञान प्राप्त किया।

जयशंकर प्रसाद 'छायावाद' के कवि थे। वह एक प्रयोगधर्मी रचनाकार थे।हिंदी साहित्य में प्रसाद जी ने कई विधाओं में साहित्य का सृजन किया। उनकी रचनाएं भारत के गौरवमय इतिहास व संस्कृति से अनुप्राणित है वहीं कामायनी उनका सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है जिसमें आनन्दवाद की नई संकल्पना समरसता का संदेश निहित है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – झरना, ऑसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य)

स्कंदगुप्त , चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जन्मेजय का नागयज्ञ राज्यश्री, अजातशत्रु (नाटक)

छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी. इंद्रजाल(कहानी संग्रह)

तथा कंकाल, तितली , इरावती (उपन्यास)।

हिंदी साहित्य के विख्यात रचनाकारों में से एक जयशंकर प्रसाद जी ने अपने काव्य लेखन की शुरुआत ब्रजभाषा से की थी। लेकिन धीरे -धीरे वे खड़ी बोली की तरफ भी आते गए और उनको यह भाषा शैली पसंद आती गई। इनकी शैली अत्यंत मीठी और

सरल भाषा में थी जिनको कोई भी आसानी से पढ़ और समझ सकता था।

(ii) मलिक मुहम्मद जायसी
उत्तर---हिन्दी साहित्य में प्रेममार्गी सूफी काव्य-धारा के पहुँचे हुए सन्त कवि मलिक मुहम्मद जायसी का जीवन अन्तः साक्ष्य एवं बहिर्साक्ष्य के आधार पर बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। सूफी कवियों की मसनवी शैली में भी कवि द्वारा अपना परिचय देने का रिवाज था इसलिए भी जायसी के जीवन की प्रमुख घटनाएँ उनके काव्य में स्थान पा गई हैं। जायसी निःसन्देह सूफी काव्य-धारा के श्रेष्ठतम कवि थे।
जन्म एवं परिवार जायसी ने अपनी पुस्तक 'आखिरी कलाम' में अपना परिचय देते हुए लिखा है-
'भा अवतार मोर नौ सदी'
'तीस वरस ऊपर कवि बदी ॥'

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि उनका जन्म 900 हिजरी अर्थात् 1492 ई० में हुआ और उन्होंने तीस वर्ष की अवस्था में कविता करनी आरम्भ की। उनका बचपन का नाम शेख मुन्सफी था परन्तु वे मुहम्मद नाम से प्रसिद्ध हुए। मलिक उनकी पैतृक उपाधि थी। जायस नगर में जन्म लेने के कारण वे जायसी कहलाए। उन्होंने लिखा भी है-
'जायस नगर मोर अस्थानु, नगरक के नाम उदयानू ॥
तहां देवस दस पहुंने आएऊ। भा बैराग बहुत सुख पाएऊँ ।'
तथा
'जायस नगर मोर अस्थानु। तहां आइ कवि कीन्ह बखान् ॥'
इस उद्धरण से स्पष्ट है कि जायस का पूर्व नाम उदयन था। जायसी वहाँ कुछ दिन के लिए अतिथि के रूप में गए। उन्हें वहाँ वैराग्य हो गया। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि वे जायस के रहने वाले थे।
जायसी के पिता का नाम शेख ममरेज था अथवा मलिक राजे अशरफ था। जायसी उनके बड़े पुत्र थे। जायसी के वो छोटे भाई भी थे। माता-पिता की मृत्यु हो जाने पर तीन भाइयों का पालन-पोषण मानिकपुर (प्रतापगढ़) में हुआथा। बड़े होने पर जायसी पुनः जायस में आकर रहने लगे थे।सात वर्ष की आयु में चेचक के प्रकोप से उनकी बायीं आँख और बायाँ कान जाता रहा, जायसी ने लिखा है-
'मुहम्मद बाई दिस तजा, इक सरवन इक आँख।' उनका शरीर भी कुछ कुबड़ा था और चेहरे पर शीतला के कई दाग उभर आए थे। इससे वे अत्यन्त कुरूप हो गए थे। जायसी अपनी कुरूपता से कुण्ठित नहीं थे बल्कि इसे भी अल्लाह की देन समझते थे। जायसी

एक बार शेरशाह सूरी से मिलने गए। उनको देखकर शेरशाह ने उनका मजाक उड़ाया। इस पर शेरशाह से उन्होंने पूछा-
'मोहिका हसंति कि कोहरहि' अर्थात् तुम मुझ पर हंस रहे हो या उस कुम्हार पर हंस रहे हो जिसने मुझे बनाया है। गुरु एवं गृह त्याग-जायसी गृहस्थ थे। उनका एक पुत्र भी था। मकान की छत गिर जाने से उनका बेटा मारा गया। जायसी को वैराग्य हो गया। सूफी सम्प्रदाय की ओर उनका झुकाव आरम्भ से ही था। शेख मोहिदी या मुहिउद्दीन चिश्ती से उन्होंने दीक्षा ली। जायसी ने हिन्दू शास्त्रों का अध्ययन भी अवश्य किया होगा क्योंकि हठयोग, वेदान्त, रसायन, ज्योतिष आदि की बहुत-सी बातें उन्होंने साधु सन्तों के सत्संग में सीखी थीं। कुरान में उनका अटल विश्वास था। अन्य धर्मों के प्रति उनकी उदार भावना थी।
रचनाएँ-मलिक मुहम्मद जायसी की तीन प्रमुख रचनाएँ स्वीकार की जाती हैं-
(1) पद्मावत (2) अखरावट (3) आखिरी कलाम।
पद्मावत उनका अमर महाकाव्य है जिसकी मूल कथा राजा रत्नसेन के जीवन से जुड़ी है। अखरावट में गुरु-शिष्य सम्वाद हैं। अक्षरों के क्रम से पद्य रचे गए हैं। इसका आरम्भ दोहा सोरठा से होता है। यह दर्शन प्रधान ग्रंथ है। 'आखिरी कलाम' में प्रलय के दिन की सम्भावित घटनाओं का काल्पनिक चित्र है। प्रलय के समय खुदा, गुनाहगारोंको मुहम्मद रसूलेपाक के कहने पर किस प्रकार मुक्ति देंगे, इसका वर्णन इस पुस्तक में है। काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से इस रचना का विशेष महत्त्व नहीं है। अन्तिम समय-मलिक मुहम्मद जायसी को अमेठी के राजा ने अपने यहां रहने के लिए सादर आमन्त्रित किया। वे जायसी के काव्य से अत्यधिक प्रभावित थे। अमेठी के मंगरा वन में वे रहते थे। कहा जाता है कि एक बार उन्होंने अमेठी के राजा से कहा कि मैं योग-बल से अन्य पशुओं का रूप धारण कर लिया करता हूँ। राजा ने उनकी बात पर विश्वास कर आसपास के वनों में शिकार की मनाही कर दी। दैवयोग से एक शिकारी वन में आ पहुँचा और उसने एक बाघ पर गोली चला दी। जब वह बाघ के निकट पहुँचा तो वहाँ जायसी को मृत पाया। अमेठी के राजा ने उनकी समाधि वहीं बनवा दी जो आज भी अमेठी राज्य में है। इस किंवदन्ती के अनुसार उनकी मृत्यु सन् 1542 में हुई थी।

प्र010: निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (1+2+1=4)

(i)चौधरी साहब एक खासे हिन्दुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कधों तक बाल लटक रहें थे। आप इधर से उधर टहल

रहें थे । एक छोटा-सा लडका पान की तश्तरी लिए पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की काँट-छाँट का क्या कहना है। जो बातें उनके मुँह से निकलती थीं, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

उत्तर ----

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यावतरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखे गए संस्मरणात्मक निबंध 'प्रेमघन की छाया – स्मृति' से लिया गया है। इसे हमारी पाठ्य – पुस्तक 'अंतरा भाग – 2' में संकलित किया गया है। चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' जी संपन्न परिवार से थे। उनके रहन – सहन तथा बोलचाल से उनकी रईसी का पता चलता था।

व्याख्या – उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' जी एक अच्छे – खासे हिन्दुस्तानी रईस थे अत: उनमें वे सब विशेषताएँ होनी स्वाभाविक थीं जो तत्कालीन रईसों (धनी – मानी व्यक्तियों) में पाई जाती थीं। वसंत पंचमी और होली के अवसर पर उनके यहाँ नाच – रंग की महफिलें सजती और पर्याप्त खर्च करके मनोरंजन किया जाता था। उनकी हर भावभंगिमा से उनकी रईसी आदतें व्यक्त होती थीं। वे तबियत से खर्च करते और लोगों के साथ महफिलों का लुत्फ (आनंद) उठाते थे। उनकी सज – धज भी आकर्षक होती थी। बड़े – बड़े बाल जो कंधों पर लटकते रहते उन्हें अलग पहचान देते थे। जब कभी वे बरामदे में इधर से उधर चहलकदमी कर रहे होते तो एक लड़का पान की तश्तरी लिए उनके पीछे – पीछे चलता। कब बाबू साहब को पान की तलब लगे और वह तश्तरी उनके सामने पेश करे। बातचीत करने में वे बड़े विदग्ध (चतुर) थे और ऐसी बातें करते कि लोग मुग्ध हो जाते। उनकी वचन वक्रता विलक्षण थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से नितांत भिन्न था। नौकरों से भी वे जो बातें करते वे सुनने लायक होती थीं।

विशेष

1 लेखक ने चौधरी जी की जीवन शैली पर प्रकाश डाला है।

2 मिश्रित शब्दावली है।

3 खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

4 चित्रात्मक तथा वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

(ii) हरगाबिन संयदिया। संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते। आदमी भगवान के घर में संवदिया बनकर आता है। संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना, जिस सुर

और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना सहज काम नहीं। गों के लोगों की गलत धारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी की संवरिया का काम करता है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा। बिना मजदूरी लिए ही जो गाँव-गाँव संवाद पहुँचावे, उसको और क्या कहेंगे? औरतों का गुलाम। जरा-सी मीती बोली सुनकर ही नशे में आ जाए, ऐसे मर्द को भी भला मर्द कहेंगे? किंतु गाँव में कौन ऐसा है, जिसके घर की माँ-बेटी का संवाद हरगोबिन ने नहीं पहुँचाया है? लेकिन ऐसा संवाद पहली बार ले जा रहा है यह।

उत्तर---

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित कहानी 'संवदिया' से उद्धृत है। इस गद्यांश में संवदिया के स्वरूप और काम पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : लेखक बताता है कि हरगोबिन एक विशेष प्रकार का संवदिया है। संवाद पहुँचने का काम सभी नहीं कर सकते। यह भी एक कला है। एक अच्छा संवदिया भगवान के घर से ही बनकर आता है। संवदिया को दिए गए संवाद का एक-एक शब्द याद रखना पड़ता है और उसे उसी लहजे में कहना पड़ता है जैसे उसे सुनाया गया हो। ठीक उसी प्रकार संवाद को सुनाना कोई आसान काम नहीं है। वैसे गाँव के लोगों के मन में संवदिया के प्रति गलत सोच है। उनका कहना है कि संवदिया एक निठल्ला और कामचोर व्यक्ति होता है। वह खाने का पेटू होता है। ऐसा आदमी ही संवदिया का काम करता है। ऐसे व्यक्ति के आगे-पीछे कोई नहीं होता अर्थात् वह घर-गृहस्थी के बंधन से मुक्त होता है। यह संवदिया बिना कोई मजदूरी लिए अपना काम करता है और गाँव-गाँव संवाद पहुँचाता है। ऐसा व्यक्ति औरतों की गुलामी के लिए यह काम करता है। कोई औरत उससे थोड़ा मीठा बोल दे तो वह नशे में आ जाता है। ऐसे व्यक्ति को मर्द नहीं कहा जा सकता। इसके बावजूद हरगोबिन गाँव के हर घर की माँ, बहू-बेटी का संवाद पहुँचाता रहता है लेकिन वह ऐसा संवाद पहली बार ले जा रहा है। यह एक अनोखा संवाद है।

विशेष : 1. संवदिया के काम पर प्रकाश डाला गया है।
2. गाँव के लागों की संवदिया के बारे में धारणा को स्पष्ट किया गया है।
3. सरल एवं सुबोध शैली अपनाई गई है।

(iii) "याद है। मै कोहाट से रावलपिंडी गया था, मिस्टर जॉन कैसे हैं ?" मैंने जॉन साहब का नाम सुन रखाथा । वे हमारे शहर के जाने-माने बैरिस्टर थे, मुस्लिम सज्जन थे ।

संभवत: गाँधी जी उनके यहाँ ठहरे होंगे । फिर सहसा ही गाँधी जी के मुँह से निकला- "अरे, मै उन दिनों कितना काम कर लेता था। कभी थकता ही नहीं था" हमसे थोड़ा की पीछे, महादेव देसाई, मोटा-सा लटु उठाए चले आ रहे थे । कोहाट और रावलपिंडी का नाम सुनते की आगे बढ़ आए और उस दौरे से जुड़ी अपनी यादें सुनाने लगे और एक बार जो सुनाना शुरू किय तो आश्रम के फाटक तक सुनाते चले गए । किसी-किसी वक्त गाँधीजी, बीच में, हँसते हुए कुछ कहते । वे बहुत धीमी आवाज में बोलते थे, लगता अपने आपसे बातें कर रहे हैं, अपने साथ ही विचारविनिमय कर रहें है। उन दिनों को स्वयं भी याद करने लगे है।

उत्तर ---
प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश भीष्म साहनी द्वारा रचित आत्मकथा 'आज के अतीत' के एक अंश 'गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात' से उद्धृत हैं। यहाँ लेखक महात्मा गाँधी के साथ सेवाग्राम आश्रम की एक घटना का उल्लेख करता है। वह प्रात:कालीन सैर पर गाँधीजी के साथ है।

व्याख्या : जब लेखक गाँधीजी को उनको रावलपिंडी यात्रा की याद दिलाता है तब गाँधीजी कहते हैं कि उन्हें उस यात्रा की भली प्रकार याद है तब वे कोहाट से रावलपिंडी गए थे। वे लेखक से मिस्टर जॉन का हाल-चाल पूछते हैं। लेखक ने जॉन साहब का पूरा नाम सुन रखा था। वे रावलपिंडी के जाने-माने बैरिस्टर थे और मुस्लिम सज्जन थे। लेखक को लगा कि संभवत: वहाँ गाँधीजी ठहरे होंगे। फिर गाँधीजी अपने उन दिनों के उत्साह को याद करने लगे। तब वे बहुत काम कर लेते थे और कभी थकते नहीं थे। तभी लेखक देखता है कि गाँधीजी के निजी सचिव महादेव देसाई एक मोटा-सा लट्ठ उठाए चले आ रहे हैं। कोहाट और रावलपिंडी का नाम सुनकर वे आगे बढ़ आते हैं और उस दौरे से संबंधित अपनी यादें सुनाने लगते हैं। उनकी यादों का सिलसिला खत्म होने को नहीं आता। वे सभी आश्रम के फाटक तक आ पहुँचते हैं।

लेखक बताता है कि कभी-कभी गाँधीजी हंसते हुए भी कुछ कहते थे। वे बड़ी धीमी आवाज में बोलते थे। इससे लगता था कि वे अपने आपसे बातें कर रहे हैं। वे उन दिनों को याद करने लगते हैं।

विशेष :
i.इस गद्यांश से गाँधीजी के स्वभाव पर प्रकाश पड़ता है।

ii.संवाद-शैली का प्रयोग किया गया है।
iii.भाषा सरल एवं सुबोध है।

प्र011 : निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-(3x2=6)

(i) बालक बच गया - कहानी के माध्यम से लेखक ने आधुनिक समाज की किस प्रवृति की ओर संकेत किया है ?
उत्तर-आधुनिक समाज में कुछ अध्यापक एवं अभिभावक बच्चों पर ज्ञान को लाद देना चाहते हैं I कम उम्र में ही उन्हें कठिन एवं जटिल विषय वस्तु रटा देना चाहते हैं I रटने से कभी ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि रटना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका फल केवल अल्प अवधि तक ही मिल सकता है। दूसरा इससे बच्चे की बुद्धि का विकास भी रुक जाता है।प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यावतरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखे गए संस्मरणात्मक निबंध 'प्रेमघन की छाया – स्मृति' से लिया गया है। इसे हमारी पाठ्य – पुस्तक 'अंतरा भाग – 2' में संकलित किया गया है। चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' जी संपन्न परिवार से थे। उनके रहन – सहन तथा बोलचाल से उनकी रईसी का पता चलता था।

(ii) रोगी बालक के प्रति गाँधी जी का व्यवहार कैसा था?
उत्तर -गाँधी जी ने जब रोगी बालक को देखा तो उन्होंने उसके पेट पर हाथ फेरा और उसको उल्टी करने को कहा। जब वह उल्टी कर रहा था तो गाँधी जी उसके पीठ को हाथ फेर कर सहला रहे थे। थोड़ी ही देर में बालक की तबीयत ठीक हो गई और फिर गाँधी जी ने बालक को कहा कि 'तू भी पागल है'। रोगी बालक के प्रति गाँधी जी का ऐसा ही व्यवहार था।

(iii)बड़ी बहुरिया के मायके से लौटकर हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया ?
उत्तर-जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने यह संकल्प लिया कि अब वह बेकार नहीं बैठेगा। आज से पूरी मेहनत और दिल से बहुरिया का सब काम करेगा। उन्हें कोई भी कष्ट नहीं होने देगा और एक बेटे के समान उनकी सेवा करेगा।

(iv) दूसरा देवदास कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर - ममता कालिया विरचित इस कहानी का नाम 'दूसरा देवदास' उचित ही है। संभव जिस प्रकार प्रथम नजर में पारो को चाहने लगता है, उसका पीछा करता है, रातभर

उसके सपनों में खोया रहता है और अगले दिन उससे मिलने की इच्छा से मंशा देबी के मंदिर में जाकर मन्नत भी मांगता है, उससे स्पष्ट है कि वह उसके प्यार में पागल हो चुका था। अपना नाम बताते हुए भी वह अपने को 'संभव देवदास' बताता है। शस्त चन्द्र की पारों और देवदास का प्रेम तो बचपन से धीरे-धीरे विकसित हुआ था परन्तु यहां तो संभव और पारी का प्यार एक ही मुलाकात का परिणाम था।

(v) शेर के मुंह और रोजगार के दफ्तर के बीच क्या अन्तर है?
उत्तर -उत्तर-बाहर के रोजगार दफ्तर नाम तो लाखों का पंजीकृत करते हैं परन्तु नौकरी किसी को भी नहीं दे पाते। शेर के भीतर का रोजगार दफ्तर असली है। रोजगार की जरूरत जिन्दा रहने के लिए होती है। शेर के मुख में जाने के बाद कोई जीवित ही नहीं रहता तो फिर रोजगार की जरूरत भी समाप्त हो जाती है।

प्र012 : निम्नलिखित में से किसी एक गद्यकार की संक्षिप्त साहित्यिक विशेषताएं लिखिए :- (1×3=3)

(i) फणीश्वर नाथ रेणु
उत्तर
विख्यात साहित्यकार ‘फणीश्वर नाथ रेणु’ जी का जन्म 4 मार्च 1921 को गांव औराही हिंगना, जिला पूर्णिया, बिहार में हुआ था।आधुनिक हिंदी साहित्य में ‘फणीश्वर नाथ रेणु’ प्रसिद्ध आंचलिक साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है, वहीं उनकी रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है मानों ग्रामीण जीवन के साक्षात दर्शन हो रहे हो। फणीश्वर नाथ रेणु एक लेखक होने के साथ साथ स्वतंत्रता सेनानी भी थे। जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाई थी।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास : मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, दीर्घतपा, कितने चौराहे।

कहानी-संग्रह : ठुमरी, एक आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, मेरी प्रिय कहानियाँ, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी।

चर्चित कहानियाँ : मारे गए गुलफाम, एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया।

उन्होंने अपने उपन्यास और कहानियों में ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसपूर्ण चित्र खींचा है। उनकी विशिष्ट भाषा-शैली ने हिंदी कथा-साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया।
1977 में पटना में इनका निधन हो गया।

(ii) ममता कालिया
उत्तर-- जीवन परिचय --- ममता कालिया का जन्म 1940 में मथुरा में हुआ। इनकी शिक्षा नागपुर, पुणे, इंदौर तथामुंबई में सम्पन्न हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम० ए० करने के पश्चात् आप दिल्ली के दौलतराम कॉलेज में 1963 से 1965 तक अंग्रेज़ी पढ़ाती रहीं। आप 1966 से 1970 तक एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय मुं में पढ़ाती रहीं तथा 1973 से 2001 तक महिला सेवा सदन डिग्री कालेज, इलाहाबाद में प्रधानाचार्य रहीं। 2003 से 2006 तक भारतीय परिषद्, कलकत्ता की निदेशक रहीं। वर्तमान में दिल्ली में रहते हुए हिन्दी की सेवा कर रही हैं।

साहित्य परिचय --- ममता कालिया अपने उपन्यास और कहानी साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। आप के प्रमुख उपन्यास हैं- 'बेघर' (1971) 'नरक दर नरक' (1975), 'प्रेम कहानी' (1980), 'एक पत्नी के नोट्स' (1997) लड़कियां तथा दौड़। 'बेघर' में लड़की की शारीरिक पवित्रता से बढ़कर भावात्मक एवं मानसिक पवित्रता पर बल दिया है। 'नरक दर नरक' में पढ़े-लिखे युवकों में बेकारी की समस्या पर विचार किया है। आपके बारह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें, ' छुटकारा' (1969), 'सीट नं० 6' (1978), 'एक अदद औरत' (1979), 'प्रतिदिन' (1983), 'उसका यौवन' (1985), 'बोलने वाली औरत' (2000) तथा 'मुखौटा' (2002) प्रसिद्ध हैं।

मान-सम्मान --- - हिन्दी में उल्लेखनीय सेवा के लिए आपको अनेक सम्मान एवं उपाधियां समय-समय पर प्राप्त हुई। उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान ने 2004 में साहित्य भूषण तथा वही से 'कहानी सम्मान' 1989 में प्राप्त हुआ था। कलकत्ता की अभिनव भारती संस्था ने उन्हें सम्पूर्ण साहित्य पर 'रचना पुरस्कार' प्रदान किया।

भाषा-शैली --- ममता कालिया ने सीमित समस्याओं को लेखन का विषय बनाया है। ममता जी शब्दों की पारखी है और उच्च कोटि का भाषा ज्ञान रखती हैं। साधारण शब्दों से जादुई प्रभाव पैदा करने की क्षमता उनमें है। व्यंग्य की सटीकता और सजीवता उनके लेखन में है। पाठ्यक्रम में संकलित कहानी 'एक और देवदास' में हर की पौड़ी का अद्भुत वर्णन किया गया है। सम्भव और पारो के प्रेम प्रसंग में स्पष्ट किया गया है कि प्रेम कभी भी, कहीं भी, किसी भी स्थान अथवा स्थिति में अंकुरित हो सकता है।

(iii) हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर - जीवन-परिचय---- हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1907 में बलिया जिला (उत्तर प्रदेश) के आरत दुबे का छपरा नामक गाँव में हुआ था। संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री की परीक्षा पास करने के पश्चात् 1930 में उन्होंने यहीं से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। द्विवेदी जी के जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन तब आया जब उन्हें गुरुदेव के शान्ति निकेतन में 1930 में हिन्दी अध्यापक नियुक्त किया गया। 1950 में वे काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में आ गए और यहाँ के अध्यक्ष भी बने।
1952-53 में द्विवेदी जी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष बने। 1955 में वे प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य मनोनीत किए गए। 1960 में आप चण्डीगढ़ स्थित पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बनाए गए। 1967 में पुनः आप काशी हिन्दी विश्वविद्यालय के रेक्टा नियुक्त हुए। केन्द्र सरकार को हिन्दी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे थे। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के भी आप अध्यक्ष रहे।
लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट० को उपाधि दी थी तथा भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण की उपाधि से अलंकृत किया था। सन् 1978 में आप का देहान्त हुआ। आलोक पर्व पुस्तक पर आपको 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया।

साहित्य-परिचय- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अनेक विधाओं में लेखन कर हिन्दी को समृद्ध किया। इनको प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
1. समीक्षात्मक ग्रन्थ - द्विवेदी जी ने हिन्दी समीक्षा को नए आयाम दिए और आचार्य शुक्ल की रसवादी परम्परा को आगे बढ़ाया। प्रसिद्ध समीक्षात्मक ग्रन्थों में 'सूर साहित्य', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'मध्यकालीन धर्म साधना 'सूर और उनका काव्य', 'नाथ सम्प्रदाय', 'कबीर', 'मेघदूत, एक पुरानी कहानी', 'लालित्य मीमांसा' तथा ' हिन्दी साहित्य का आदिकाल' आदि।
2. उपन्यास-द्विवेदी जी ने तोन उपन्यास लिखें- 'वाणभट्ट की आत्मकथा', 'अनामदास का पोथा' तथा 'चारू -चन्द्रलेखा'।

3. निबन्ध संग्रह- अशोक के फूल, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क तथा कल्पलता। आचार्य द्विवेदी का समस्त साहित्य ग्यारह खण्डों में प्रकाशित हो चुका है।
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कबीर' पर पुस्तक लिखकर उन्हें हिन्दी साहित्य में उचित स्थान दिलवाया। हिये साहित्य के इतिहास लेखन में उन्होंने स्पष्ट किया कि हिन्दी साहित्य भारतीय परम्पराओं का सहज विकास है। विदेश शासन ने उसे बहुत कम प्रभावित किया है। भक्ति साहित्य मुगल शासन के दमन का परिणाम नहीं था।
निबन्ध लेखन के क्षेत्र में द्विवेदों जी ने ललित निबन्ध लेखन को समृद्ध किया। आचार्य शुक्ल की तरह इनके निबन्ध सुगठित और विचार प्रधान नहीं है परन्तु उनमें कल्पना की मुक्त उड़ान और पांडित्य झलकता है। द्विवेदी जी हंसी- हंसी में गुर-गम्भीर बातें कह जाते हैं। इतिहास-पुराण का आपको अच्छा ज्ञान था। गुरुदेव टैगोर और क्षितिमोहन में जैसे महान् लोगों के साथ शान्ति निकेतन में रहने से आपकी दृष्टि उदार बनी थी और चिन्तन में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष उभरा था।

भाषा शिल्प - संस्कृत के गम्भीर विद्वान् होने के कारण आपकी रचनाओं में भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान रहती है और संस्कृत की सूक्तियों का प्रयोग भी आप प्रायः करते हैं। आपकी भाषा प्रांजल हिन्दी कही जा सकती। जिसमें सुबोध, सरल, स्वच्छ और सार्थक शब्दावली का प्रयोग हुआ है। वे सरल वाक्यों में हो प्रायः अपनी बात हैं। उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी सहज ही कर लेते हैं। इनकी भाषा में हास्य-व्यंग्य के छोटे सर्वत्र मिलेंगे। द्विवे कहते जी की मुक्त हंसी और गम्भीर अध्ययन की छाप इनके लेखन पर साफ दिखती है।
आचार्य हजारो प्रगाद द्विवेदी अन्वेषक, आलोचक, इतिहास लेखक, सम्पादक, व्याख्यात्ता तथा उपन्यासकार के साथ साथ कुशल वक्ता तथा अध्यापक थे। उनका महत्त्व केवल इसलिए नहीं है कि उन्होंने अनेक विधाओं में लिखा है बल्कि इसलिए है कि उन्होंने अतीत के सर्वोत्तम को वर्तमान के सर्वश्रेष्ठ के साथ जोड़कर भविष्य के लिए पथ प्रशस्त किया।

प्र013: निम्नलिखित में से किन्हीं दो पश्नों के उत्तर लिखिए :- (2x2=4)

(i) जगधर के मन मे किस तरह का ईर्ष्या भाव जागा और क्यों ?
उत्तर - जगधर जब भैरों के घर यह पता करने पंहुचा कि सूरदास के घर आग किसने लगवाई थी तो उसे पता लगा कि भैरों ने ही सूरदास के घर आग लगवाई है इसके साथ

ही उसने सूरदास की पूरे जीवन की जमापूँजी भी हथिया ली थी। यह राशि पाँच सो रुपए से अधिक की है। जगधर को भैरों के पास इतना रुपया देखकर अच्छा न लगा था। वह जानता है कि यह इतना रुपया था जिससे भैरों की जिंदगी की सारी कठिनाई पलभर में दूर हो सकती थी।

(ii) विसनाथ पर क्या अत्याचार हो गया ?
उत्तर :बिसनाथ (विश्वनाथ) जब शिशु था तब पहले वह अकेला था और माँ के दूध का एकमात्र हकदार था। तभी छोटा भाई आ गया। विश्वनाथ माँ के दूध से कट गया। अब माँ के दूध पर छोटे भाई का कब्जा हो गया। इस प्रकार बिसनाथ (विश्वनाथ) पर अत्याचार हो गया।

(iii) हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है, क्यों और कैसे ?
उत्तर --- लेखक प्रभाष जोशी आज के युग में भारत में नदियों की उपेक्षा देखकर दुखी हैं। जिस देश में नदियों की माँ समझ कर पूजा जाता था वहाँ जल को प्रदूषित करने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। आज यह श्रद्धाभाव समाप्त हो गया है। नदियों के किनारे विश्व की सारी महान् सभ्यताएं पैदा हुई हैं। आज की हमारी सभ्यता नदियों के किनारे शहर बसा रही है, बड़े उद्योग लगा रही है। शहर भर का गन्दा पानी, कचरा और औद्योगिक जहरीले रसायन नदियों में फेंके जा रहे हैं। विशालकाय बाँधों से नदियों का जल सूख गया है और वह नालों का रूप धारण करती जा रही हैं। सदानीरा नदियाँ केवल बरसात में पानी से भरती है। वर्ष भर वह शहर के गन्दे नालों का पानी और कचरा ढोती हैं। पूज्य भाव के बिना पर्यावरण रक्षा सम्भव नहीं।

(iv) फूल केवल गंध की नहीं देते, दवा भी करते है. कैसे ?
उत्तर --- विसनाथ ने बचपन में गाँव में अनेक तरह के फूल देखे, सूंघे और कानों में खोंसे थे। गाँव में लोगों का विश्वास था कि फूल केवल सुगन्ध ही नहीं देते बल्कि रोगों के इलाज में भी सहायक हैं। भरमंडा का फूल पीली तितली जैसा होता था जिसे आँख दुखनी आने पर माँ आँखों पर लगाकर इलाज करती थी। नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के सिरहाने रखने से लाभ होता है। यह माना जाता था। बेर की जंगली गंध से बरें और तितैये का डंक गिर जाताहै और वह काट नहीं पाता यह भी माना जाता था इस प्रकार फूल, दवा का काम भी करते थे।

प्र०14 : " यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी"। संदर्भ सहित विवेचन कीजिए ।   (2+2=4)

उत्तर: सूरदास एक अंधा भिखारी था। उनके जीवन या उनकी संपत्ति का आधार कहा जाए तो उनके पास केवल एक छोटी सी झोपड़ी , ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा और जीवनभर की जमा की गई पूँजी थी , जिसके लिए उनके मन में काफ़ी अरमान थे। उनकी ज़मीन पर गाँव के सभी जानवर चरते थे। सूरदास उसी से ख़ुश था। झोपड़ी जल चुकी थी , जिसे फिर से बनाया जा सकता था लेकिन उस आग में उसकी जमा पूँजी भी जलकर राख हो गई। वह इच्छाएँ जो उसने उस जमा पूँजी के साथ बाँधी थी वह जलकर राख हो गई थी। वह ग्रामीणों के लिए एक कुआँ बनाना चाहता था , अपने बेटे की शादी करना चाहता था और अपने पूर्वजों को गया जाकर पिंड दान करना चाहता था । उनकी कुल जमा पूँजी पाँच सौ रुपये थी जो फिर से इतनी जल्दी जमा होना संभव नहीं । झोपड़ी के साथ ही अपनी संचित पूंजी भी जल जाने के कारण अपनी किसी भी आकांक्षा को पूरा नहीं कर सका , इसलिए उसने महसूस किया कि यह राख “ फूस की राख नहीं बल्कि उसकी अभिलाषाओं की राख है । “ अब सूरदास के पास कुछ भी नहीं था।बस दुख और अफ़सोस के साथ राख में अपनी इच्छाओं की खोज कर रहा था ।

अथवा

लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते है। वह उजाड़ की अपसभ्यता है ? आप क्या मानते है ?

उत्तर----लेखक को लगता है कि आज का मनुष्य अधिक उत्पादन और अधिक उपभोग को ही विकास का पैमाना मानता है। हमारी सभ्यता प्राकृतिक साधनों का अधिकाधिक प्रयोग करने को विकास मानती है। धरती और जल के संसाधन हम इतनी तेज़ी से प्रयोग कर रहे हैं कि आने वाले समय में इनका अभाव होगा ही। आज की सभ्यता वर्तमान की चिन्ता करती है, भविष्य की नहीं। विकास की इस सभ्यता को लेखक खाऊ-उजाड़ अपसभ्यता कहता है। लेखक को लगता है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग कर रहे हैं उन्हें उजाड़ रहे हैं परन्तु उनके संरक्षण और परिवर्द्धन की बात भी नहीं कर रहे। हमारे विचार से लेखक की दृष्टि सकारात्मक है। विकास कभी भी एकांगी नहीं हो सकता। बाँधों से लोगों का विस्थापन, उद्योगों से प्रकृति का विनाश और खनिजों का अन्धा-धुन्ध दोहन मानवता के भविष्य के लिए ख़तरा पैदा करेगा। हमें धारणीय विकास

को अपना लक्ष्य बनाना पड़ेगा। विकास की वर्तमान अवधारणा ने पर्यावरण असन्तुलन पैदा किया है, ओज़ोन पर्त में छेद हुआ है, ध्रुवों पर बर्फ पिघल रही है, ग्लेशियर गल रहे हैं, स्तर बढ़ रहा है और धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है। यह सब आने वाले महाविनाश की चेतावनियां हैं। मनुष्य को प्रलय से बचने के लिए अपना विकास का रास्ता बदलना होगा।